भूली दास्तान

SUDHA NAIR

दोपहार का समय। नवम्बर की खिली धूप के वावजूद वातावरण ठंडा है। आलीशान महल के नीचे एक विदेशी मोटर गाडी आकर सकी। वर्दीधारी द्वारपाल ने निकल कर गाडी का दरवाज़ा खोला और साहब को सलाम किया। डॉ. संजय मेहता।

राधिका नर्सिंग होम के चीफ सर्जन डॉ. संजय मेहता को कौन नहीं जानता। मगर लंबे कद के उस खूबसूरत नौजवान ने मानो तीस साल की उम्र में ही पूरी दुनिया का बोझ अपने कंधे पर ले लिया। थकी आँखें, जिस में मानों दुनिया भर का दुख समाया हो। डा. धीरे से आस्पताल के अन्दर की ओर बटा। होठों में एक फीकी मुस्कुराहट जो किसी जीत की खुशी न होकर के बडी पराजय से समझौता था।

आराम कुरसी पर सिर टिका कर लेटे हुए वह सोच रहा था - संसार की इस दौड में वह कितना पीछे है। वह थक गया था। जिन्दगी ने उससे बहुत परीक्षाएँ ली थीं। प्यार रुपी शतरंज में उसने बहुत कुछ गीत की भी सबकुछ खो दिया। आज उसे विश्वास हो गया कि उस ऊपरवाले के हाथ में मनुष्य एक कठपुतली मात्रा है।

आज सुबह नर्सिंग होम के एमरजेंसी विभाग में एक केस आया। कार एक्सिडेंट में खून बहुत बह गया था। बीमार की हालत बहुत खराब थी। डा. मेहता ने पूरी कोशिश की थी। मगर कुछ कहा नहीं जा सकता, ऊपरवाले की बात ही कुछ और है।

जब संजय मेहता आपरेशन हाल से बाहर निकला तो सामने एक औरत को हाथों में सिर थाम बैठकर रोते देखा। शायद बीमार की पत्नी थी। अचानक अपना नाम सुनकर डाक्टर ने उस औरत की ओर देखा —

"डाक्टर साहब - मेरे पति की हालत कैसी है ? — उन्हें बचा लीजिए डाक्टर, प्लीस। मेरे सुहाग मुझसे मत छीनिए।"

जाना पहचाना स्वर - जो वह कभी नहीं फल सकता: डाक्टर ने उस औरत को बडे ध्यान से देखा - और औरत ने डाक्टर को भी। इससे क्षण दोनों स्तब्द रह गये। राधिका के काँपते अधरों से ये शब्द निकल पडे .... स .... स ... संजू .... तुम। मगर तब तक संजय ने खुद को संभाल लिया था। क्योंकि राधिका किसी और की पत्नी है। डाक्टर ने सान्त्वना देते हुए कहा —

"घबराहड मत। मिस्टर विजय की हालत सीरियस ज़रूर है, मगर धर्य रखिए, सब ठीक हो जाएगा।" संजय फिर वहँ नहीं सक। दिल के अन्धेरे कोने में बन्द रखे सूखे नासुर अब अचानक राधिका के दर्शन से फिर से हरे हो गये।

'छोटे साहब' खाना लगा गया हैं। रामूकाका की आवाज संजय को यादों की दुनिया से छुडा लायी। अनजाने में दुलक पेड आँसुओं कों पोंछ कर संजय ने कहा - 'रामूकाका तुम खा लो मुझे अब भूख नहीं है।'

संजय धीरे से उटा और अलमारी से दस साल पुराने उस कार्ड को निकला। गुज़रते समय ने उस पर भी अपने पीले निशान घोड दिये थे। नाम धुँधले हो गये थे, मगर संजय के दिल में वे कटार से खुदे हुए थे —

"राधिका वेड्स डाक्टर विजय" दस साल पहले की बात है। संजय डाक्टर समय मेहता न होकर दो टर्क का आर्टिस्ट था। ईश्वर ने उसे कुछ भी तो नहीं दिया था। जन्म लेते ही पिताजी मर गये। माताजी ने मज़दूरी करके बेटे को बी. एस. सी तक पढाया। परीक्षाफल जानने के पहले माताजी भी चल बसी। बी. एस. सी. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के बाद वह नौकरी की तलाश में दिन बिताने लगा। राधिका कालेज में उस के साथ पढती थी। आर्टिस्ट और खूबसूरत संजय को उस अमीर घर की बेटी प्यार करने लगी। सेठ अमीरचंद की इकलौती बेटी राधिका और गरीब संजय। मित्रों ने समझाया, संजू तू राधिका को भूल जा। लेकिन प्रेम अन्धा है। एव दिन संजय ने सेठ से बेटी का हाथ माँगा। सेठ के शब्द आज भी कभी कभी संजय को नींद से जगाते हैं — "शर्म नहीं आती। दो टक का आर्टिस्ट, पैंटर मेरी बेटी से शादी करने चला आया। तुझे इतनी हिम्मत कैसे हुई। अगर कभी मेरी बेटी से मिलने आने तो.... ...." संजय सुनने केलिए वहाँ सका नहीं।

उसने पेंटिग और हित्ररचना में मन लगा कर दुखों को भूलना चाहा। बहुत जल्दी वह एक माना जाना आर्टिस्ट

बन रहा था। एक दिन राधिका का वेडिंग लेटर उसे मिला। "राधिका विथ डाक्टर विजय"। उस डाक्टर शब्द की गरिमा और भार। संजय सोचने लगा। वह बी. एस॰ सी फस्ट डिवजन में पास हुआ है। अपने चित्रों की प्रदर्शनियों से उसके पास काफी पैसा आने लगा है। उसने एक प्रतिज्ञ ली, मैं एक डाक्टर बन जाऊँगा। महीनों के कठिन अध्ययन के बाद उसने एक विश्वविद्यालय की मेडिसिन की प्रवेश परीक्षा पास की। नतीजा यह हुआ कि जेंडर संजू कुछ ही वर्ष में डा. संजय मेहता बन गया। आज वह दो टके का पेंटर नहीं, शहर का मशहूर डाक्टर संजय मेहता है जिनका नर्सिंग होम शहर का सब से बडा आस्पताल है। मगर संजय आज भी दूखी है।

संजय को आँखों से दो बूंद आँसू उस पुराने वेडिंग कार्ड पर गिरे जो 'विजय' फैल कर उस नाम को छिपाने लगा।

'छोटे साहब' – रामूकाका दौड के आया .... अस्पताल से फोन आया है ... .। संजय फोन की ओर बढा मानों वह इसी का इन्तजार कर रहा था। ●

गुलाब का फूल

SUBHASH CHANDRAN

मेरा कालेज जाने का समय हुआ। धूल से भरी किताब उठाकर हाथ से साफ करके बगल में रख ली। एक और बार जाकर शीशे में अपनी शक्ल देख ली। मूंछ पर उँगलियाँ फैरीं, बाल एक बार सँवारा और मैं घर से निकल पडा।

आज मेरे मन में कालेज जाने की इच्छा नहीं थी। लेकिन कोई शक्ति मुझे कालेज की ओर खींच रही थी।

जब मैं कालेज पहूँचा तो रोज की तरह वह मेरे पास आयी। उसके हाथ में एक गुलाब का फल था और ओठों पर एक दूसरा गुलाब खिला था। मैं ने मन हीं मन कहा — 'वार एक ब्यूटिफुल गेल! मैं ने बडे प्रेम से उसे देखा। उसने जवाब में गुलाब का फूल मेरी ओर बढाया। मेरे काँपते हाथ ने फूल ले लिया और 'तैंकयु' कहकर मैं जाने लगा तो मीठी आवाज़ में वह बोली - 'यह भी लो'।

वह एक चिट्ठी थी। में ने एकांत में वह खोल कर पढा। वह प्रेम - पत्र था। प्यार के कितने अक्ष्य कितने शब्द हमने लिखे। वे मीठे दिन कितने रंगीन थे। हम ने एक साथ सिनेमा देखा। पिकनिक गये। शाम को बीच में मिले। जीवन के उपवनों में तितलियों की तिरह फिरे।

इस प्रकार कई दिन बीते। हमारा प्यार बढता गया। संसार अपने पहिये पर फिरता रहा।

एक दिन जब मैं कालेज पहूँचा तो वह पूर्वा। धक संतोष के साथ मेरे पास आकर बोली एक खुशखबरी है, मेरी शादी होनेवाली है।' मैं स्तब्ध रह गया। उसने एक किताब खोलकर एक चि ी निकाली और बडे प्यार से मेरे हाथ में दी। वह एक वेडिंग लेटर था। चिट्ठी खोल कर मैं केवल इतना देख सका — 'सजना विथ राजीव'।

मैं ने काँपते स्वर में पूछा — 'क्या तुम मुझे प्यार नहीं करती थी?'

तब वह ठहाका मारके हँसने लगी मानों मैं साल का सब से बडा विट बोला हूँ। मैं ने फरे दिल से फिर पूछा — 'तेरा प्यार केवल अभिनय था? प्यार मुझ से किया और शादि दूसरे से! ऐसा क्यों? वह शान्तभाव से बोली — 'प्यार और शादी दोनों विचित्र हैं। मुझे तुम्हारी शक्ल अच्छी लगी और मैं ने प्यार किया, सिर्फ प्यार। उस से बढकर कुछ नहीं। शादी तो सोच समझ कर करनी चाहिए। वह ऐसी कोई दिल्लगी नहीं है जो स्कूलों और कालेजों के मैदानों में हो जाए। तुम अच्छे हो, सुन्दर हो तुम्हें अब भी मैं चाहती हूँ, केवल एक दोस्त के रूप में। तुम्हारा जैसा एक गरीब लडका किसी भी हालत में मेरा पति नहीं बन सकता। इस सत्य को मैं जानती हूँ, तुम्हें भी मालूम होना चाहिए था। सैर, कोई बात नहीं। सोच लो, मैं ने ठीक कहा कि नहीं। 'शादि में जरूर आना' कहकर हँसते हुए वह चली।

उसके बाद कितने साल बीत गये। मैं ने कभी किसी से प्यार नहीं किया, शादि नहीं की आज भी जब कभी एक गुलाब के फूल को देखता हूँ पल भर केलिए उसकी याद आ जाती है। दूसरे क्षण वह फूल मेरे दिल में काटा बन जाता है।